SN : 2319-8095
ogressive Research Journal
l.1 No.1 December 2012

' स्नातक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं उनके सामाजिक आर्थिक स्तर तथा आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन"

अजय कुमार सिंह*

डा० अरूण कुमार सिंह**

'वर्तमान युग को विज्ञान एवं तकनीकी युग के रूप में देखा जा रहा है। जिसके कारण विश्व के सभी देशों और संस्कृतियों का सम्पर्क तेजी से बढ़ा है जिसके फलस्वरूप भारत में भी तीव्र परिवर्तन देखने को मिलता है जिसे हम आधुनिकता के रूप में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में जैसे– खान–पान, वेश–भूषा, बोल–चाल, विवाह के तरीके, रहन–सहन, व्यवहार, पठन–पाठन आदि में देखा जा सकता है। यद्यपि इनको प्रभावित करने वाले अनेक कारण हैं यथा– सामाजिक–आर्थिक स्थिति, आवास, आयु, लिंग, बुद्धि, शिक्षा आदि। परन्तु इन सबसे प्रभावी कारण शिक्षा है। क्योंकि शिक्षा ज्ञान में वृद्धि करती है और मूल्यों तथा धारणाओं में परिवर्तन लाती है जो आधुनिकीकरण के उद्देश्य तक पहुँचने के लिए आवश्यक होता है। इस प्रकार स्पष्ट होताहै कि शिक्षा किसी भी मानव का मेरुदण्ड है और इसके द्वारा समाज में व्याप्त जडता, अन्धविश्वास, कूटनीति आदि को समाप्त किया जा सकता है।

प्रस्या कथन– " स्नातक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं उनके सामाजिक आर्थिक स्तर तथा आधुनिकता के ति अभिवृत्ति के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन"

ययन का उददेश्य–

तुत अध्ययन के निम्नलिखित उददेश्य होंगे–

स्नातक स्तर के उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति तथा मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्थिति पर छात्रों की उपलब्धि का अध्ययन करना।

स्नातक स्तर के मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्थिति तथा निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति पर छात्रों की उपलब्धि का अध्ययन करना।

स्नातक स्तर के निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति तथा उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति पर छात्रों की उपलब्धि का अध्ययन करना।

स्नातकस्तर के उच्चसामाजिक–आर्थिक स्थिति तथा मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्थिति पर छात्रों की उपलब्धि का अध्ययन करना।

ा की परिकल्पना–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

स्नातक स्तर के उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति तथा मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्थिति पर छात्रों के उपलब्धि कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

स्नातक स्तर के मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्थिति तथा निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति पर छात्रों के उपलब्धि कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

स्नातक स्तर के निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति तथा उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति पर छात्रों के उपलब्धि कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

य छात्र शिक्षा संकाय के.एन.आई. सुल्तानपुर

विभागाध्यक्ष बी.एड. एम.एल.के. पी.जी. कालेज, बलरामपुर

Scanned with OKEN Scanner

जनसंख्या तथा न्यादर्श–

1. समस्या के अध्ययन के लिए न्यादर्श के रूप में चार जनपदों के आठ महाविद्यालयों का चयन किया ग

2. प्रदत्तो के संकलन हेतु यादृच्छिक चयन विधि से 400 छात्रों का चुनाव किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण–

प्रस्तुत शोध के लिए स्वनिर्मित परिस्थिति सूचकांक मापनी का प्रयोग किया गया है।प्रदत्तों के विश्लेषण एवं व्याख्या–सर्वेक्षण प्रपत्र द्वारा गोण्डा, बलरामपुर, बहराइच और श्रावस्ती जनपद के आठ महावि कुल 400 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया तत्पश्चात उनसे प्राप्त उत्तरों के आधार पर मध्यमान तथा मानक विचलन ज्ञात किया गया इसके पश्चात अन्तरकी पुष्टि के लिए टी परीक्षण किया गया। इसके अधार पर व्याख्या किया गया है।

तालिका 1 उच्च एवं मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्थिति

	उच्च	मध्यम	t' value
कुल छात्रों की संख्या	150	125	0.34
मध्यमान	72.5	56.66	
प्रमाणिक विचलन	15.66	11.12	

t तालिका में देखने पर सार्थकता स्तर 0.05 स्तर पर 1.96 तथा 0.01 स्तर पर 2.59 है जो कि 34,तालिका मानों से कम है इसलिए मध्यमानों का अन्तर सार्थक नहीं है। इस प्रकार प्रथम परिकल्पन स्तर के उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति तथा मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्थिति पर छात्रों के उप सार्थक अन्तर नहीं है, निरस्त की जाती है।

तालिका 2 निम्न एवं उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति

	मध्यम	निम्न	t' value
कुल छात्रों की संख्या	125	125	6.43
मध्यमान	56.66	44.18	
प्रमाणिक विचलन	11.12	16.42	

तालिका 3 सामाजिक–आर्थिक स्थिति

	उच्च	निम्न	t' value
कुल छात्रों की संख्या	150	125	14.90
मध्यमान	72.5	44.18	
प्रमाणिक विचलन	15.66	16.42	

तालिका 2 को देखने पर स्पष्ट होता है कि t का मान .6.43 है जो कि सार्थकता मानों से, अधिक है इ यमानों में सार्थक अन्तर है। अतः वर्ग 2 के छात्रों का निष्पत्ति स्तर वर्ग 1 के छात्रों से अधिक है। इसलि परिकल्पना स्नातक स्तर के मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्थिति तथा निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति पर उपलब्धि कोई सार्थक अन्तर नहीं है। " निरस्त की जाती है।

तालिका 3 को देखने पर स्पष्ट होता है कि t का मान .14.90 है जो कि सार्थकता मानों से, अधिक है इ यमानों में सार्थक अन्तर है। अतः वर्ग 2 के छात्रों का निष्पत्ति स्तर वर्ग 1 के छात्रों से अधिक है। इसलि

Scanned with OKEN Scanner

परिकल्पना स्नातक स्तर के मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्थिति तथा निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति पर छात्रों के उपलब्धि कोई सार्थक अन्तर नहीं है।" निरस्त की जाती है।

सन्दर्भ :

कपिल एच.के.	–	सांख्यिकी के मूल तत्व
गुप्ता एस.पी.,	–	मापन एवं मूल्यांकन
बघेल डी. एस.	–	आधुनिकीकरण और आधुनिकता
बेस्ट जॉन डब्लू यू.	–	रिसर्च इन एजूकेशन
राय पारसनाथ	–	अनुसंधान परिचय

Scanned with OKEN Scanner